ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रांति एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

राजन कुमार शर्मा
शोधछात्र (इतिहास–विभाग)

छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर
यू0 जी0 सी0 नेट–जून–2015

सारांश
सम्पूर्ण क्रांति के प्रणेता भारतीय स्वतंत्रता–आंदोलन के महान् योद्धा, मार्क्सवादी से गांधिवादी, समाजवादी तथा सर्वोदय आंदोलन के नेता जयप्रकाश नारायण अपने युग के महान नेता थे। उन्होंने आजादी तथा आजादी के बाद देश में फैले भ्रष्टाचार, कुशासन, मंहगाई, गलत शिक्षा–नीति के कारण उत्पन्न बेरोजगारी को मिटाने के लिए अनवरत संघर्ष किए। उन्होंने लोकतांत्रिक मूल्यों में ह्रास होते हुए देखा तथा उनको दूर करने के लिए उन्होंने सम्पूर्ण क्रांति का आह्वाहन किया। सम्पूर्ण क्रांति के माध्यम से उन्होंने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, नैतिक–आध्यात्मिक, शैक्षणिक एवं बौद्धिक क्रांति की शुरूआत की। उन्होंने इस क्रांति के माध्यम से समाज में आमूल–चूल परिवर्तन की बात की। उनके अनुसार इस क्रांति का उद्देश्य था अन्याय, शोषण को खत्म करना तथा स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुता की स्थापना करना। सम्पूर्ण क्रांति आज भी प्रासंगिक है क्योंकि समाज में आज भी सामाजिक, आर्थिक समस्याएँ मौजूद है। इन समस्याओं को दूर करने के लिए सम्पूर्ण क्रांति की आवश्यकता है।

(मुख्य शब्द)- समाजवाद, सम्पूर्ण क्रांति, सामाजिक परिवर्तन, राजनीतिक व्यवस्था, आर्थिक समानता एवं सांस्कृतिक क्रांति

प्रस्तावना
भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के महान योद्धा, सम्पूर्ण क्रांति के प्रणेता समाजवादी विचारक जयप्रकाश नारायण भारतीय नेताओं में महत्वपूर्ण स्थान रखते थे। उन्होंने अपने समाजवादी विचारों में लोकतांत्रिक समाजवाद, सर्वोदय एवं सम्पूर्ण क्रांति को महत्व दिया। इन विचारों के माध्यम से वह समाज में आमूल–चूल परिवर्त्तन लाना चाहते थे। वे लोकतंत्र, स्वतंत्रता, समानता, भ्रातृत्व की भावनाओं एवं धर्मनिरपेक्षता के समर्थक थे। उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लोकतंत्र में ह्रास, भ्रष्टाचार, दल–बदली की समस्या को देखा। उन्होंने लोकतंत्र को मजबूत बनाने के लिए 5 जून 1974 को पटना के गाँधी मैदान में औपचारिक रूप से सम्पूर्ण क्रांति की घोषणा की। सम्पूर्ण क्रांति का उद्देश्य भारतीय लोकतंत्र को वास्तविक तथा सृदृढ बनाना, जनता का सच्चा राज कायम करना, समाज से अन्याय, शोषण आदि का अंत करना, एक नैतिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक क्रांति करना, नया बिहार बनाना और अंततोगत्वा नया भारत बनाना है। जयप्रकाश नारायण ने सम्पूर्ण क्रांति और समग्र क्रांति में अंतर किया। उनका कहना था कि सम्पूर्ण क्रांति में अगर पूर्णतः जोड़ दिया जाय तो समग्र क्रांति कहा जाना चाहिए। सम्पूर्ण क्रांति के माध्यम से व्यक्ति और समाज का विकास हो, तथा दोनों ऊपर उठे, लेकिन केवल शासन बदले इतना ही नहीं समाज एवं व्यक्ति दोनों बदलाना चाहिए। उन्होंने कहा समग्र क्रांति का अर्थ मानव की चेतना तथा समाज की बाह्य संरचनाओं में आमूलचूल परिवर्तन करना है। विज्ञान की सहायता से मानव चेतना तथा सांस्कृतिक विरासत में तालमेल स्थापित किया जाना चाहिए। प्रौद्योगिकी का मानव–चेतना पर नियंत्रण शिथिल किया जाय। यह कार्य परम्परागत राजनीतिक,सामाजिक तथा आर्थिक संरचनाओं एवं प्रक्रियाओं द्वारा नहीं किया जा सकता। यह चेतना–जागृति का नव–शिक्षण आंदोलन है। जयप्रकाश नारायण सम्पूर्ण क्रांति के लिए संघर्ष को अत्यधिक महत्वपूर्ण मानते थे। वे संघर्ष को मार्क्सवादी वर्ग–संघर्ष के अनुरूप नहीं समझते थे। उनका मानना था कि भारत में गांधीजी के अत्यंत प्रभाव के कारण मार्क्सवादी वर्ग संघर्ष कभी सफल नहीं हो सकता। उन्होंने कहा सभी वर्गो के लोगों को इस क्रांति में भाग लेना चाहिए तथा इसको सफल बनाने के लिए नवीन विचारधारा की आवश्यकता है। इसके साथ ही साथ संघर्ष, वर्ग–संघर्ष से भी अधिक व्यापक रूप में होगा इसमें पिछड़ें, दलित वर्गो के समर्थन के साथ–साथ समाज को ऊपर के वर्ग के नवयुवक भी इसमें सम्मिलित होगें।, नवयुवक इसमें मुख्य भूमिका में होगी। तभी जाकर एक नया समाज का निर्माण होगा। लेकिन यह क्रांति शांतिपूर्ण ढंग से होगा, किसी भी प्रकार से लोकतंत्र एवं प्रजातंत्रातमक जीवन प(ति को हानि नहीं पहुँचाया जायेगा। समग्र क्रांति के संदर्भ में जयप्रकाश नारायण ने मिश्रित अर्थव्यवस्था पर बल दिया तथा एक ऐसी व्यवस्था को लाने के पक्ष में थे, जो शोषण रहित हो और जो सबको पेटभर भोजन रहने के लिए मकान प्रदान करें और जिसमें सभी लोग सभी वस्तुओं को मिल बाँटकर प्रयोग करें। वे आर्थिक समानता के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन लाने चाहते थे। उन्होंने सम्पूर्ण क्रांति के तहत सात क्रांतियों का प्रतिपादन किया जो इस प्रकार हैः–

सामाजिक क्रांति

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

सामाजिक क्रांति के द्वारा जे0 पी0 समाज में समानता एवं बंधुत्व की स्थापना पर जोर दिया करते थे। उन्होंने जातीयता के उन्मूलन, दहेज प्रथा, जनेऊ प्रथा, छुआछुत इत्यादि के उन्मूलन पर विचार दिया। उन्होंने सम्पूर्ण क्रांति के माध्यम से समाज में उच्चता एवं निम्नता की भावना को खत्म करने का प्रयास किया है। जयप्रकाश नारायण ने जाति व्यवस्था पर प्रहार करते हुए कहा है कि जातीयता हमारे लिए एक अभिशाप है। जातीयता का जो भाव लोगों के दिलों में बैठा हुआ है उससे हर क्षेत्र प्रभावित होता है। उनका कहना है कि जाति इस प्रकार भारतीय समाज को जकड़ा है कि वर्तमान में राजनीति ने जाति–व्यवस्था को मजबूत बना दिया। उन्होंने कहा कि समाज में सभी मनुष्य समान हैं उन्होंने समाज में सभी प्रकार के भेदभाव के उन्मूलन की बात की। उनका मानना था कि समाज में मनुष्य के गुण–कर्म के अनुसार उसका इज्जत किया जाना चाहिए। कोई व्यक्ति अच्छा है तो वह जाति के कारण नहीं बल्कि अपने चरित्र के कारण। उन्होंने जाति प्रथा को तोड़ने के लिए अंतरजातीय विवाहों का वकालत की। दहेज प्रथा का भी उन्होंने जमकर विरोध किया तथा युवाओं को ललकारा तथा कहा कि तिलक–दहेज का विरोध करो। उन्होंने सामाजिक कुरातियाँ का भी विरोध किया। सामाजिक कुरीतियाँ जैसे बाल–विवाह, छुआछूत, जनेऊ प्रथा तथा सामाजिक रूढ़ियों के खिलाफ उन्होंने आंदोलन किया। उन्होंने कहा कि सम्पूर्ण क्रांति का मतलब सामाजिक जीवन के एक–एक अंग में परिवर्तन से है। यह परिवर्तन शादी–विवाह से लेकर चुनाव तक एवं शासन–तंत्र के एक–एक चीज में परिवर्तन करना ही सम्पूर्ण क्रांति है।

शैक्षिक क्रांति

शैक्षिक क्रांति के माध्यम से जयप्रकाश नारायण समाज में आमूल–चूल परिवर्तन या सम्पूर्ण क्रांति लाना चाहते थे। उनका कहना था वर्तमान शिक्षा पद्धति ब्रिटिश दर्शन पर आधारित है,जिसमें रोजगार का कम अवसर प्राप्त होता है बल्कि इस शिक्षण पद्धति द्वारा सिर्फ उपाधि बांटी जाती है। यह शिक्षा प्रणाली भारतीय सामाजिक व्यवस्था के अनुरूप नहीं है। इस शिक्षा पद्धति की सबसे बड़ी कमी है एक ओर जहाँ अधिकांश बच्चे को शिक्षा से वंचित किया जाता है वहीं दूसरी और गलत ढंग से बच्चों को शिक्षित किया जाता है। जयप्रकाश नारायण का मानना था कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो जीवन के लिए उपयोगी हो। उन्होंने प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय तक की शिक्षा की पद्धति में आमूल चूल परिवर्तन की बात की। उनका मानना था कि वर्तमान शिक्षा पद्धति से नौकरियाँ खोजते है, खोजने के क्रम में दर–दर ठोकर खाते हैं। फिर नौकरियाँ नहीं मिलती हैं तो कोई जीवन–यापन का रास्ता नहीं रहता है। माओ ने युवकों से कहा था कि कारखानों में, खेतों में जाओ, वहाँ जाकर सीखो–समझो। वही आपका विश्वविद्यालय है। उनका मानना है कि आज की जो शिक्षा व्यवस्था है उसमें विद्यार्थी कुछ सीखे या ना सिखे लेकिन उनके नाम के सामने बी. ए., एम. ए. की डिग्री लगी रहती है,जिससे उसे नौकरी के लिए उपर्युक्त मान लिये जाते है। ज्यादातर लोग पढ़ाई इसलिए करते हैं ताकि नौकरी मिल सके। उनका कहना था कि डिग्री के आधार पर नौकरी नहीं मिलनी चाहिए बल्कि कार्य के आधार पर नौकरी की व्यवस्था की जानी चाहिए तथा जिस काम के लिए नौकरी दी जायेगी उस काम के लिए अलग से परीक्षा ली जाये। उन्होंने कहा कि योग्यता केवल डिग्री से नहीं मापी जाती है क्योंकि डिग्री प्राप्त कर लेना योग्यता का प्रमाण–पत्र नहीं हो सकता। उन्होंने शिक्षा को रोजगारपरक बनाने की बात की। जयप्रकाश नारायण ने शिक्षा संबंधी सुझाव देते हुए कहा कि राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुकुल शिक्षा के गुण एवं तत्व के विकास के लिए कारगर कदम उठाये जायें। मौजूद ढाँचे मे प्रत्येक स्तर पर सुधार किया जाये। माध्यमिक स्तर से शिक्षा को जीविकोन्मुख बनाया जाये, जिसके साथ आर्थिक योजना की एक ऐसी प्रणाली हो, जो रोजगार की गारंटी दे। शिक्षण–संबंधी नौकरियों को छोड़ अन्य नौकरियों के लिए विश्वविद्यालय की डिग्री आवश्यक न रहें। पाँच वर्षो के अंदर प्राथमिक शिक्षा और व्यस्क शिक्षा के सार्वजनिक प्रसार को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाये। शिक्षण–संस्थाओं में सरकार के हस्तक्षेप पर रोक लगायी जाये। इन संस्थाओं का प्रबंध साधारणतः उनके शिक्षकों को सौंपा जाये और उनमें लोकतांत्रिक ढंग से छात्रों की भागीदारी हो। उन्होंने शिक्षा की परिवर्तन की वकालत की। उन्होंने कहा ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिए जिससे बुद्धि का विकास हो। जयप्रकाश नारायण ने कहा कि ऐसी शिक्षा प्रणाली होनी चाहिए जिससे व्यक्ति, समाज एवं देश की समस्या का निदान खोजने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके उनका कहना था कि शिक्षा श्रम मूलक हो और न्यूनतम शिक्षा सभी को प्राप्त हो। वे महिलाओं के शिक्षा के विशेष हिमायती थे।

आर्थिक क्रांति

जयप्रकाश नारायण ने व्यक्तिगत सम्पत्ति एवं पूंजीवादी व्यवस्था का विरोध किया उन्होंने वर्ग प्रधान समाज को मिटाकर वर्गविहीन समाज की स्थापना पर जोर दिया। उनका मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुरूप उत्पादन करेगा तथा इसका कोई शोषण नहीं करेगा। उनकी राय थी कि, भूमि का स्वामित्व गांव का होना चाहिए। उनका मानना था कि ट्रस्टीशिप के सिद्धांत के माध्यम से सम्पूर्ण क्रांति को सफल बनाया जा सकता है। आर्थिक क्रांति के माध्यम से जयप्रकाश नारायण ने मुख्यरूप से भूमि से संबंधित विचार रखते है एवं ट्रस्टीशिप के माध्यम से सम्पत्ति को सार्वजनिक करना चाहते थे। उन्होंने लिखा है कि गाँवों में जमीन की समस्या है, मजदूरी की समस्या, जात–पाँत, ऊँच–नीच, अस्पृश्यता आदि की समस्याएँ हैं। इन समस्याओं के बीच सबसे मूलभूत समस्या गरीबी की है, बेकारी की है और अशिक्षा की है। इन समस्याओं का एक ही हल है पूरे समाज का ढाँचा बदला जाये। उनका मानना है कि भूमि के ऊपर कब्जा किसानों का होना चाहिए। समाज में जो प्राकृतिक सम्पत्ति है उस पर समाज का नियंत्रण होना चाहिए। उनका मानना था कि जमीन पर उसी का अधिकार होगा जो हाथों से खेती करता है। उन्होंने कहा सीलिंग के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति को आजीविका के साधन को ईमानदारी से पालन करना चाहिए। जयप्रकाश नारायण सम्पूर्ण क्रांति की सफलता के लिए गाँधीजी द्वारा प्रतिपादित ट्रस्टीशिप के सिद्धांत को

Copyright © 2020 Authors

आवश्यक माना। उन्होंने कहा कि एक नागरिक, व्यापारी, शिक्षक, डॉक्टर या वकील हो किसी उद्योग का मालिक, मजदूर हो वह समाज के प्रति अपने क्या कर्तव्य हैं, उन्हें समझकर अपने कार्य को ईमानदारी के साथ पूरा करें।

राजनीतिक क्रांति

जयप्रकाश नारायण सम्पूर्ण क्रांति के माध्यम से राजनीतिक क्रांति लाना चाहते थे। उन्होंने राजनीतिक शब्द का प्रयोग सत्ता की राजनीति से नहीं किया बल्कि राजनीति का प्रयोग सत्ता की विकेन्द्रीकरण से किया। उन्होंने स्थानीय स्वायत्तशासी संस्थाओं के गठन की आवश्यकता जताते हुए कहा कि ग्राम, प्रखंड और जिला स्तर की ये स्थानीय स्वायतशासी ही लोकतंत्र की बुनियाद को मजबूत बना सकेगी। राजनीतिक क्रांति के तहत जयप्रकाश नारायण ने संसदीय लोकतंत्र की वकालत की। उन्होंने कहा कि पश्चिम के लोकंतत्र में आर्थिक महत्व नहीं दिया गया। जबकि भारत के लोकतंत्र में समाजवादी आंदोलन के कारण मजदूर–आंदोलनों, आर्थिक कार्यक्रमों, आदर्शो और विचारों का प्रवेश हुआ है। उनका मानना था कि भारत में लोकतंत्र मजबूत होते जा रहा है क्योंकि यहाँ का परिवेश लोकतंत्र के अनुरूप है। लोकतंत्र को मजबूत बनाने में लोकसंस्थाएँ एवं परम्पराओं का महत्वपूर्ण स्थान रहा। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र की बुनियाद को मजबूत बनाने में स्थानीय स्वायत्तशासी संस्थाएँ का योगदान रहा है। ये स्थानीय स्वायत्तशासी संस्थाएँ ही ग्राम, प्रखंड और जिला–स्तर पर कार्य किए। इससे विकेन्द्रीकरण की ओर सरकार का झुकाव होगा।

सांस्कृतिक क्रांति

जयप्रकाश नारायण सांस्कृतिक क्रांति के माध्यम से मनुष्य में ज्ञान से अधिक कर्म पर जोर देने की बात की। उन्होंने रूढ़िवादी संस्कृति का उन्मूलन कर वैसी संस्कृति पर जोर देने की बात की जो देश की जनता को एकता के सूत्र में बाँध सके। उनका विचार था कि मनुष्य के विचारों को बदलने में कला, साहित्य, संगीत की प्रमुख भूमिका रही है। उन्होंने कहा पारम्परावादी विचारों के स्थान रचनात्मक विचारों को ज्यादा महत्व दिया। उनका मानना है कि सांस्कृतिक क्रांति आंतरिक सौन्दर्य और सृजनात्मक तत्वों के विकास में ही संभव है। सहिष्णुता, करूणा,प्रेम, विनम्रता,कर्तव्यपरायणता ही मनुष्य के आभूषण हैं। यही आभूषण मनुष्य के जीवन के मूल्य हैं। इन मूल्यों को हर हाल में संरक्षण एवं संवर्द्धन की आवश्यकता हैं। इसलिए उन्होंने अहिंसात्मक क्रांति पर जोर दिया। उन्होंने सांस्कृतिक क्रांति के माध्यम से भारतीय संस्कृति की रक्षा करना तथा जनता में प्राचीन सांस्कृतिक मूल्यों को स्थापित करना चाहते थे। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति में कर्म पर जोर दिया गया है। कर्म ही जीवन की सुख–शांति का मार्ग है।

नैतिक–आध्यात्मिक क्रांति

नैतिक–आध्यात्मिक क्रांति के माध्यम से जयप्रकाश नारायण ने आपस में विभेद पैदा करने वाले धर्म को परित्याग कर मूल्यों पर जोड़ दिया। उन्होंने मनुष्य को द्रव्य एवं आत्म कहा। उन्होंने कहा जीवन में भौतिक और आध्यात्मिक दोनों तरह की आवश्यकताएँ पूर्ति होनी चाहिए। उन्होंने भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भोजन,वस्त्र,घर आदि पर बल दिया। उनका मानना था कि भोजन सादा, पौष्टिक एवं स्वादिष्ट होना चाहिए। वस्त्र भड़कीला नहीं बल्कि मुलायम एवं कोमल होना चाहिए जो सभी ऋतुओं के लिए पर्याप्त हो। ज्यादा वस्त्र नहीं होना चाहिए। घर छोटा होना चाहिए जो मानव निवास के लिए स्वच्छ हवादार होनी चाहिए। रहन–सहन में विलासिता नहीं होनी चाहिए। उन्होंने जीवन को तृष्णा, बाहुल्य–संपत्तिसंग्रह आदि से दूर रखने की बात की। उन्होंने कहा नैतिक–आध्यात्मिक के साथ–साथ आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक पारिस्थितिक एवं प्राकृतिक कारण मानव–जीवन के पोषण के संदर्भ में उल्लेखनीय है। उनका मानना था कि राजनीति की सबसे बड़ी दुर्घटना उसका नैतिकताविहीन होना है उन्होंने कहा सत्ताधरियों का चेहरा बदलता है, लेकिन उसका चरित्र नहीं बदलता है तो समाज में सुख शांति और आनंद कभी नहीं आयेगा। वे संतुलित समाज के पक्षधर थे। उनका मानना था कि प्रगति नहीं विकास चाहिए। उन्होंने कहा अच्छे समाज की रचना के लिए शांति–स्नेह, सौहार्द और सद्भाव का होना जरूरी है जिससे अच्छे समाज की रचना हो सके।

बौद्धिक क्रांति

जयप्रकाश नारायण का कहना था कि समाज में बुद्धिहीन या विचारशून्य व्यक्ति कोई क्रांति नहीं ला सकता। समाज में क्रांति लाने के लिए सच्चा विचारक होना जरूरी है। विचार की शक्ति किसी भी अन्य मानवीय शक्ति से बड़ी होती है। यह शक्ति हमेशा समाज में होने वाली क्रांति का नेतृत्व करती है। उनका मानना था कि बड़ी क्रांति वहीं है, जिसमें समाज के बड़े हिस्से की हिस्सेदारी हो। उनका विचार था कि मनुष्य के जड़ता को हटाने के लिए वैचारिक क्रांति आवश्यक हैं। वैचारिक क्रांति को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करने के लिए संगठन की जरूरत होती है। उनका मानना था कि विश्व की जितनी भी क्रांतियाँ हुई हैं उनमें सिर्फ सत्ता परिवर्तन हुए हैं। समाज की सड़ी–गली परंपरा, अंधविश्वास तथा पर्यायवरणीय संकटो का समाधान कहाँ हुआ है। इसलिए इन सबों के लिए बौद्धिक क्रांति की जरूरत है। बौद्धिक क्रांति हमेशा बने रहने से ही समाज के व्यापक परिवर्तन संभव है। आजादी के बाद देश में फैले भ्रष्टाचार, जातिवाद, कुशासन, मंहगाई, गलत शिक्षा–नीति के कारण उत्पन्न बेरोजगारी को मिटाने में जयप्रकाश नारायण ने अनवरत संघर्ष किया। इस संघर्ष को उन्होंने नाम दिया सम्पूर्ण क्रांति। आज भी देश के अंदर तमाम समस्याएँ मौजूद है, ये समस्याएँ देश की एकता एवं अखंडता, स्वतंत्रता, समानता, बंधुता एवं लोकतांत्रिक मूल्यों पर प्रहार करती है। अतः इन मूल्यों को बचाने के लिए समग्र क्रांति की आवश्यकता है। समग्र क्रांति की प्रासंगिकता इस प्रकार हैं। देश के अंदर जातिवाद राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक स्तर पर फैला हुआ जो देश की प्रगति के लिए बाधक है। आज भी समाज में दहेज प्रथा, बाल विवाह जनेऊ संस्कार आदि मौजूद है। इन कुप्रथा को दूर करने के लिए सामाजिक क्रांति की आवश्यकता है जिसके माध्यम से इन सभी कुप्रथा को दूर किया जा सकता है।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

जयप्रकाश नारायण की शिक्षा क्रांति आज भी प्रासंगिक है क्योंकि आज भी शिक्षा रोजगारोन्मुख नहीं है बल्कि उपाधि बाँटने वाली शिक्षा व्यवस्था है, जबकि उन्होंने शिक्षा को रोजगारपरक बनाने की बात की थी। समाज में आज भी गरीबी, बेराजगारी,भूखमरी एवं जमींदारी प्रथा मौजूद है इन समस्यों को हल करने के लिए जयप्रकाश नारायण ने छोटे–छोटे उद्योग लगाने की बात की थी, जमींदारी उन्मूलन के लिए जमीनों का बँटवारा किया जाय, तथा गाँधीजी के ट्रस्टीशिप के सिद्धांत की वकालत की थी। भारत में आज भी सत्ता की केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति है जबकि उन्होंने राजनीतिक क्रांति के माध्यम से सत्ता की विकेन्द्रीकरण की वकालत की। सत्ता में जनता की ज्यादा से ज्यादा भागीदारी सुनिश्चित करने की बात की। जो आज भी प्रासंगिक है। सांस्कृतिक क्रांति के माध्यम से उन्होंने भाग्य पर नहीं कर्म पर जोर देने की बात की। उनके विचार आज भी प्रासंगिक है कि वे भारतीय परंपरा एवं मूल्यों की स्थापना करना चाहते थे। देश के अंदर नैतिकता का ह्रास को राकेने के लिए उन्होंने जो नैतिक–आध्यात्मिक क्रांति की वो आज भी प्रासंगिक है। आज भी शांति, स्नेह, सौहर्द और सद्भाव की बात की जाती है। उनका मानना था कि विचार शून्य व्यक्ति समाज में क्रांति नहीं ला सकता है। इसलिए समाज में सच्चा विचारक होना जरूरी है अतः जयप्रकाश नारायण सम्पूर्ण क्रांति के माध्यम से अपने तत्कालीन समय के समस्याओं को हल करने की कोशिश की। वो सारी समस्या आज भी हमारे सामने मौजूद है। आज भी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं बौद्धिक समस्या मौजूद है। इस क्रांति के माध्यम से आमूल–चूल परिवर्तन की जाय।

संदर्भ–सूची

1. अजित भट्टाचार्या– जयप्रकाश नारायण ए पोलिटिकल बायोग्राफी, विकास पब्लिसिंग हाउस दिल्ली 1975, पृष्ठ संख्या–31–32
2. नारायण, जयप्रकाश, सम्पूर्ण क्रांति, सर्व–सेवा–संघ–प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी 2005, पृष्ठ–29
3. वहीं पृष्ठ–31
4. वहीं पृष्ठ–32
5. शर्मा, बी.एन भारतीय राजनीतिक विचारक पृष्ठ–205
6. नारायण, जयप्रकाश, सम्पूर्ण क्रांति, पृष्ठ–45
7. शर्मा बी.एम. भारतीय राजनीतिक विचारक पृष्ठ–12
8. नारायण, जयप्रकाश, मेरी विचारयात्रा–2 सर्व सेवा संघ प्रकाशन वाराणसी,2001 पृष्ठ–103
9. नारायण सम्पूर्ण क्रांति, पृष्ठ–23
10. कुमार, डॉ0 धीरज, लोकनायक जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रांति, जागृति पब्लिकेशन, पटना 2002, पृष्ठ–95
11. प्रभात खबर, पटना, 12 अक्टूबर, 1998
12. सिन्हा विभाग लोकदृष्टि में जयप्रकाश, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी पटना पृष्ठ संख्या–124–125
13. नारायण जयप्रकाश–मेरी विचार यात्रा भाग–2 पृष्ठ–113
14. सिन्हा, विभा लोकदृष्टि में जयप्रकाश बिहारी हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना पृष्ठ–375
15. इंडिया टुडे पत्रिका 2005
16. जयप्रकाश एक सामाजिक वक्ता एवं सुधारक पृष्ठ संख्या–12

Copyright © 2020 Authors